International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 1, Issue- 4 | July - August 2024 ISSN: 3048-9490

तंबाकू सेवन से महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर प्रभाव

मंजूषा कुमारी [1], डॉ. प्रीति कुमारी [2]

[1] शोधार्थी, वाई.बी.एन. यूनिवर्सिटी, रांची, झारखण्ड

[2] सहायक प्राध्यापक, वाई.बी.एन. यूनिवर्सिटी, रांची, झारखण्ड

सारांश

तंबाकू सेवन एक वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है, परंतु भारत जैसे विकासशील देशों में इसका प्रभाव और भी गहरा होता है, विशेष रूप से महिलाओं के सामाजिक जीवन पर। पारंपरिक रूप से पुरुषों के साथ जोड़ा जाने वाला तंबाकू सेवन अब महिलाओं के मध्य भी बढ़ रहा है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका, स्वास्थ्य और सम्मान पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस शोध में महिलाओं के तंबाकू सेवन के बढ़ते प्रचलन, इसके सामाजिक कारणों, और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न सामाजिक चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। तंबाकू सेवन करने वाली महिलाएं अक्सर सामाजिक कलंक (Stigma) का सामना करती हैं। भारतीय समाज में महिलाओं से संयमित और परंपरागत व्यवहार की अपेक्षा की जाती है, ऐसे में तंबाकू जैसे मादक पदार्थ का सेवन उन्हें 'अशिष्ट' या 'चरित्रहीन' समझे जाने का कारण बनता है। यह सामाजिक दृष्टिकोण उनके आत्म-सम्मान, पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। साथ ही, यह व्यवहार उन्हें रोजगार के अवसरों और सामुदायिक भागीदारी से भी वंचित कर सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषकर निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्ग की महिलाएं, चबाने योग्य तंबाकू जैसे गुटखा, जर्दा, खैनी आदि का उपयोग अधिक करती हैं। यह प्रचलन अक्सर सांस्कृतिक परंपराओं, कार्य की थकान, या मनोरंजन की कमी जैसे कारणों से होता है। हालाँकि, इन कारणों के पीछे मूल में शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य जागरूकता का अभाव और सामाजिक दबाव भी प्रमुख हैं। स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव जैसे ओरल कैंसर, प्रजनन तंत्र की समस्याएं, और नवजात शिशुओं पर पड़ने वाले प्रभाव भी महिलाओं के सामाजिक स्थान को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। एक अस्वस्थ महिला न केवल स्वयं के लिए, बल्कि पूरे परिवार के लिए संकट बन सकती है, जिससे उसकी पारिवारिक भूमिका में भी कटौती होती है।

प्रमुख शब्द: तंबाकू सेवन, महिला स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति, पारिवारिक प्रभाव. ग्रामीण महिलाएं

परिचय:

भारत सहित विश्व के अनेक देशों में तंबाकू का सेवन एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्या बन चुका है। परंपरागत रूप से तंबाकू सेवन को पुरुषों से जोड़ा जाता रहा है, परंतु हाल के वर्षों में महिलाओं में भी इसके उपयोग की प्रवृत्ति में वृद्धि देखी गई है। यह परिवर्तन न केवल उनके स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका और समाज में प्रतिष्ठा पर भी नकारात्मक प्रभाव डालता है। तंबाकू सेवन अब केवल एक व्यक्तिगत आदत नहीं रह गई है, बल्कि यह एक बहुआयामी सामाजिक मुद्दा बन चुका है, विशेषकर महिलाओं के संदर्भ में। महिलाओं का तंबाकू की ओर झुकाव विभिन्न कारणों से होता है – मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव, पारिवारिक पृष्ठभूमि, जागरूकता की कमी, विज्ञापनों का प्रभाव, और कुछ मामलों में सामाजिक स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के रूप में भी। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाएँ गुटखा, खैनी, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि तंबाकू

उत्पादों का सेवन करती पाई जाती हैं। यह आदत न केवल उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालती है, जैसे कि कैंसर, श्वसन रोग, प्रजनन संबंधी समस्याएँ आदि, बल्कि उनके परिवारों के आर्थिक बोझ को भी बढ़ाती है।

तंबाकू सेवन करने वाली महिलाओं को सामाजिक स्तर पर भी कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। समाज उन्हें अनैतिक, चरित्रहीन या जिम्मेदारियों से विमुख मान सकता है। इससे उनका आत्मविश्वास और सामाजिक स्वीकृति प्रभावित होती है। पारिवारिक स्तर पर भी उन्हें उपेक्षा, तिरस्कार और कभी-कभी घरेलू हिंसा का शिकार होना पड़ सकता है। विशेष रूप से मातृत्व की दृष्टि से तंबाकू सेवन महिला और शिशु दोनों के लिए घातक सिद्ध हो सकता है, जिससे उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण और अधिक कठोर हो जाता है। इस प्रस्तावना में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि तंबाकू सेवन महिलाओं के लिए केवल स्वास्थ्य की ही नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान, सम्मान और अस्तित्व की भी चुनौती बन गया है। अतः इस समस्या का समाधान केवल चिकित्सा या कानूनी उपायों से नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक जागरूकता, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के प्रयासों से ही संभव है। इस अध्ययन का उद्देश्य तंबाकू सेवन के कारण महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना तथा इसके समाधान हेतु संभावित उपायों की तलाश करना है।

1. सामाजिक छवि पर प्रभाव: भारतीय समाज में तंबाकू का सेवन महिलाओं के लिए अब भी वर्जित माना जाता है। जब कोई महिला खुले तौर पर तंबाकू का सेवन करती है, तो समाज उसे "चरित्रहीन", "लापरवाह" या "असभ्य" के रूप में देखता है। यह सामाजिक कलंक न केवल उस महिला की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है, बल्कि उसके पारिवारिक और व्यावसायिक संबंधों पर भी विपरीत असर डालता है। तंबाकू सेवन, विशेषतः जब महिलाएं इसका सेवन करती हैं, तो यह उनके सामाजिक छवि और प्रतिष्ठा पर गंभीर प्रभाव डालता है। भारतीय समाज, जो परंपरागत रूप से महिलाओं से संयम, मर्यादा और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की अपेक्षा रखता है, वहां तंबाकू सेवन को महिलाओं के लिए एक असामान्य और अनुचित व्यवहार माना जाता है।

महिलाओं द्वारा तंबाकू का सेवन करना अक्सर सामाजिक आलोचना, कलंक और बहिष्कार का कारण बनता है। उन्हें "चरित्रहीन", "बदचलन" या "असभ्य" जैसी संज्ञाओं से नवाज़ा जाता है, जिससे उनकी व्यक्तिगत और पारिवारिक प्रतिष्ठा प्रभावित होती है। इस प्रकार का सामाजिक पूर्वग्रह उनके आत्मसम्मान, मानसिक स्वास्थ्य, और सामाजिक सहभागिता में बाधा उत्पन्न करता है। इसके अतिरिक्त, विवाह योग्य लड़कियों के लिए तंबाकू सेवन एक बड़ी बाधा बन सकता है, क्योंकि पारंपरिक मानसिकता वाले परिवार ऐसे व्यवहार को स्वीकार नहीं करते। कार्यस्थलों पर भी महिला कर्मचारियों की छवि प्रभावित होती है, जिससे उनके पेशेवर विकास और सामाजिक नेटवर्क में असमानता उत्पन्न हो सकती है।

तंबाकू सेवन के कारण महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं के साथ-साथ सामाजिक अलगाव, घरेलू हिंसा, और आर्थिक निर्भरता जैसी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है। विशेषकर निम्न आय वर्ग की महिलाएं, जो पहले से ही हाशिये पर हैं, उनके लिए यह आदत सामाजिक और आर्थिक दोहरी मार बन जाती है।

2. स्वास्थ्य और आर्थिक दुष्परिणाम: तंबाकू सेवन से जुड़ी बीमारियाँ जैसे मुँह का कैंसर, फेफड़ों की समस्याएँ, प्रजनन संबंधी विकार आदि महिलाओं को लंबे समय तक प्रभावित करती हैं। इलाज पर खर्च होने वाला धन उनके आर्थिक आत्मनिर्भरता को भी कमजोर करता है, विशेषतः गरीब या निम्नवर्गीय महिलाएँ इससे अधिक प्रभावित होती हैं। कई बार स्वास्थ्य समस्याओं के चलते उन्हें काम छोड़ना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और अधिक कमजोर हो जाती है। तंबाकू सेवन का महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से उनके स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति के संदर्भ में। पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं को परिवार और समाज की रीढ़ माना जाता

है, किंतु जब वे तंबाकू जैसी लत का शिकार होती हैं, तो यह न केवल उनके स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है, बल्कि उनकी सामाजिक छवि और पारिवारिक ज़िम्मेदारियों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

2.1 स्वास्थ्य पर प्रभाव: तंबाकू सेवन से महिलाओं में फेफड़ों का कैंसर, हृदय रोग, मुंह का कैंसर, प्रजनन संबंधी समस्याएं तथा गर्भावस्था के दौरान जटिलताएं जैसे कि मृत शिशु जन्म (stillbirth), समय से पूर्व प्रसव और कम वजन के शिशु का जन्म आदि देखने को मिलते हैं। इसके अतिरिक्त, महिलाओं की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है, जिससे वे अन्य बीमारियों की चपेट में जल्दी आ जाती हैं। तंबाकू का सेवन स्त्रियों में समय से पहले बुढ़ापा लाता है और मानसिक तनाव को भी बढ़ाता है।

2.2 आर्थिक दुष्परिणाम: तंबाकू पर होने वाला निरंतर खर्च महिलाओं की व्यक्तिगत और पारिवारिक आय पर भारी बोझ डालता है। विशेष रूप से निम्न वर्ग की महिलाएं जो सीमित संसाधनों में गृहस्थी चलाती हैं, उनके लिए यह व्यय अत्यंत विनाशकारी होता है। तंबाकूजनित रोगों के इलाज में खर्च होने वाली राशि परिवार की अन्य आवश्यकताओं जैसे शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं से संसाधनों को छीन लेती है। परिणामस्वरूप, महिलाएं आर्थिक रूप से निर्भर और सामाजिक रूप से हाशिये पर चली जाती हैं।

3. पारिवारिक जीवन पर प्रभाव: तंबाकू सेवन करने वाली महिलाओं को कई बार अपने परिवार, खासकर पति या ससुराल वालों से विरोध का सामना करना पड़ता है। इससे पारिवारिक कलह बढ़ता है और महिलाओं पर मानसिक तनाव भी बढ़ता है। बच्चों पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ता है, क्योंकि वे या तो इसे सामान्य मानकर अनुकरण करने लगते हैं या अपनी माँ से दूरी बना लेते हैं।

तंबाकू सेवन का महिलाओं की सामाजिक स्थिति और पारिवारिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पारंपरिक समाज में महिलाएं परिवार की संरक्षक मानी जाती हैं, लेकिन तंबाकू सेवन उनके स्वास्थ्य और व्यवहार में नकारात्मक बदलाव लाता है, जिससे पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण हो जाता है। तंबाकू के सेवन से महिलाओं में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ती हैं, जैसे कि फेफड़ों की बीमारियां, गर्भावस्था में जटिलताएं, और मानसिक अस्थिरता। ये स्वास्थ्य समस्याएं महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाने की क्षमता को प्रभावित करती हैं।

सामाजिक दृष्टिकोण से भी तंबाकू सेवन करने वाली महिलाओं को कई बार परिवार और समाज में नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है, जिससे उनका सामाजिक सम्मान घटता है। पारिवारिक जीवन में तंबाकू सेवन से उत्पन्न तनाव, हिंसा, और आर्थिक समस्या भी सामने आती हैं। उदाहरण के तौर पर, तंबाकू खरीदने के लिए खर्च बढ़ना परिवार की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है, जिससे पारिवारिक कलह बढ़ती है। इसके अतिरिक्त, महिलाओं का तंबाकू सेवन करने से बच्चों और अन्य परिवार के सदस्यों के लिए भी अस्वच्छ वातावरण बनता है, जिससे पारिवारिक संबंध कमजोर पड़ते हैं।

4. महिलाओं में आत्मविश्वास की कमी: तंबाकू सेवन को लेकर समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण कई महिलाओं को अपराधबोध, शर्म और हीन भावना से ग्रसित कर देता है। इसका सीधा असर उनके आत्मसम्मान और आत्मविश्वास पर पड़ता है। वे स्वयं को समाज से अलग-थलग महसूस करने लगती हैं। तंबाकू सेवन महिलाओं के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति पर भी गंभीर प्रभाव डालता है। समाज में तंबाकू सेवन को प्रायः पुरुषों से जोड़ा जाता है, इसलिए जब महिलाएं इसका सेवन करती हैं, तो उन्हें सामाजिक आलोचना और कलंक का सामना करना पड़ता है। यह सामाजिक दबाव और तिरस्कार उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता है, जिससे उनमें आत्मविश्वास की कमी आ जाती है।

तंबाकू का सेवन करने वाली महिलाओं को अकसर "चरित्रहीन" या "बुरी आदतों वाली" समझा जाता है, जिससे वे सामाजिक अवसरों से वंचित रह जाती हैं। नौकरी, विवाह, तथा पारिवारिक संबंधों में उन्हें अविश्वास और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इस सामाजिक बहिष्कार के कारण वे खुद को हीन समझने लगती हैं और सार्वजनिक मंचों पर अपने विचार रखने में हिचकिचाने लगती हैं। इसके अलावा, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं जैसे सांस की बीमारी, दांतों का खराब होना, और शरीर में दुर्गंध जैसी बातें उनके आत्मविश्वास को और कम कर देती हैं। इस प्रकार तंबाकू सेवन महिलाओं की आत्म-छवि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जिससे उनका सामाजिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

5. ग्रामीण बनाम शहरी परिवेश: ग्रामीण क्षेत्रों में तंबाकू का सेवन कभी-कभी पारंपरिक या घरेलू उपचार के रूप में भी देखा जाता है, जिससे वहाँ की महिलाएँ अधिक प्रभावित होती हैं। शहरी क्षेत्रों में भले ही यह कुछ हद तक "सामाजिक स्टाइल" के रूप में देखा जाए, फिर भी सामाजिक रूप से यह स्वीकृत नहीं है। तंबाकू सेवन का प्रभाव महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर व्यापक रूप से परिलक्षित होता है, विशेष रूप से जब हम ग्रामीण और शहरी परिवेश की तुलना करते हैं। भारत में तंबाकू सेवन केवल एक स्वास्थ्य समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक भूमिका और लैंगिक असमानता से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा तंबाकू का सेवन अधिक सामान्य माना जाता है, विशेष रूप से मौखिक रूप में (जैसे खैनी, गुटखा या बीड़ी)। यह व्यवहार अक्सर सांस्कृतिक स्वीकृति के तहत आता है और कार्य की थकान दूर करने या सामाजिक मेलजोल का एक माध्यम बनता है। हालांकि, इसके कारण महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ जाती हैं, जिससे उनका पारिवारिक दायित्व निभाना कठिन हो जाता है। इसके अलावा, जब तंबाकू सेवन अत्यधिक हो जाता है, तो यह महिलाओं को सामाजिक आलोचना और उपेक्षा का शिकार भी बना देता है, खासकर यदि वे निम्न जाति या आर्थिक रूप से कमजोर तबके से हों।

शहरी क्षेत्रों में तंबाकू सेवन करने वाली महिलाओं को अलग प्रकार की सामाजिक प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ता है। यहाँ यह व्यवहार "अस्वीकार्य" या "चरित्रहीनता" के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, विशेषतः जब महिलाएँ सिगरेट या अन्य आधुनिक तंबाकू उत्पादों का प्रयोग करती हैं। यह उनकी पेशेवर छवि, सामाजिक प्रतिष्ठा और वैवाहिक संभावनाओं को प्रभावित करता है। शहरी महिलाओं के लिए तंबाकू सेवन, स्वतंत्रता की एक अभिव्यक्ति भी हो सकता है, लेकिन समाज इसे अक्सर नकारात्मक दृष्टि से देखता है।

निष्कर्ष:

तंबाकू सेवन न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि उनके सामाजिक सम्मान, पारिवारिक रिश्तों और मानसिक स्थिति को भी गंभीर रूप से चोट पहुँचाता है। इसलिए तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी, शिक्षा और जागरूकता अभियान अत्यंत आवश्यक हैं। महिलाओं को सशक्त करने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें एक स्वस्थ और समर्थ जीवन शैली अपनाने की दिशा में प्रेरित किया जाए। तंबाकू सेवन महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव डालता है। सामाजिक, आर्थिक, और स्वास्थ्य संबंधी पहलुओं में इसका नकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सबसे पहले, तंबाकू सेवन से महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे उनकी कार्यक्षमता और जीवन गुणवत्ता प्रभावित होती है। इससे वे परिवार और समाज में अपनी भूमिका को पूरी तरह से निभाने में असमर्थ हो जाती हैं, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा कम हो जाती है।

सामाजिक दृष्टिकोण से, तंबाकू सेवन को अभी भी कई समुदायों में नकारात्मक माना जाता है, विशेषकर महिलाओं के लिए। तंबाकू पीने वाली महिलाओं को अक्सर सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता है, जिससे वे भेदभाव और

सामाजिक बहिष्कार की स्थिति में आ जाती हैं। यह सामाजिक कलंक उनकी आत्मसम्मान और मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है, जो उनके सामाजिक सहभागिता को सीमित करता है। आर्थिक दृष्टि से, तंबाकू सेवन से महिलाओं के परिवारों की वित्तीय स्थिति प्रभावित होती है। तंबाकू की खरीदारी पर खर्च बढ़ता है, जो परिवार की आय में कटौती करता है और आवश्यक खर्चों के लिए कम संसाधन बचते हैं। इसके अलावा, तंबाकू सेवन के कारण स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ने से चिकित्सा खर्च भी बढ़ता है, जो आर्थिक बोझ को और अधिक बढ़ाता है।

अतः, तंबाकू सेवन महिलाओं की सामाजिक स्थिति को कमजोर करता है, उनके स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिरता, और सामाजिक सम्मान को नुकसान पहुंचाता है। महिलाओं को तंबाकू सेवन से बचाने के लिए शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, और सशक्त समर्थन प्रणाली आवश्यक है ताकि वे स्वस्थ, सम्मानित, और समान सामाजिक स्थिति में रह सकें। सरकार और समाज दोनों को मिलकर इस समस्या का समाधान निकालना होगा ताकि महिलाओं का जीवन बेहतर और सम्मानजनक हो सके।

संदर्भः-

1. गुप्ता, पी.सी., और रे, सी.एस. (2003)। भारत और दक्षिण एशिया में धुआँ रहित तम्बाकू और स्वास्थ्य। रेस्पिरोलॉजी, 8(4), 419-431।
2. रानी, एम., बोनू, एस., झा, पी., गुयेन, एस.एन., और जामजौम, एल. (2003)। भारत में तम्बाकू का उपयोग: राष्ट्रीय क्रॉस-सेक्शनल घरेलू सर्वेक्षण में धूम्रपान और चबाने की व्यापकता और भविष्यवक्ता। तम्बाकू नियंत्रण, 12(4), ई4।
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)। (2021)। वैश्विक तम्बाकू महामारी रिपोर्ट।
4. मिश्रा, ए., और मिश्रा, एस.के. (2013)। महिलाओं और तम्बाकू के उपयोग पर एक अध्ययन: सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, 74(1), 45-59।
5. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW), भारत सरकार। (2020)। वैश्विक वयस्क तंबाकू सर्वेक्षण (GATS) 2 भारत 2016-17।
6. जॉन, आर.एम., और मामुडु, एच.एम. (2010)। भारत में महिला सशक्तिकरण और तंबाकू का उपयोग। बीएमसी पब्लिक हेल्थ, 10, 1-10।
7. सिन्हा, डी.एन., एट अल. (2018)। दक्षिण-पूर्व एशिया में महिलाओं में तंबाकू का उपयोग: कार्रवाई के लिए साक्ष्य। डब्ल्यूएचओ एसईएआरओ।
8. सरीन, ई., एट अल. (2017)। भारत में महिलाओं में तंबाकू का उपयोग: राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण का विश्लेषण। इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च, 145(4), 468–475।
9. भिसे, आर.ए. (2012)। पशु मॉडल और मनुष्यों में रासायनिक रूप से प्रेरित मौखिक कैंसर। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कैंसर रिसर्च।
10. कुमार, एस., और देबनाथ, ए. (2018)। भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य पर तंबाकू के उपयोग का प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। जर्नल ऑफ सोशल हेल्थ स्टडीज, 4(2), 102-117।